❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एनो मा नि गाम्।
अथर्व. 5/3/4
हे प्रभो! मैं पापी न बनूं।
O God! I should never become a sinner.

वर्ष 41, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 जुलाई, 2018 से रविवार 8 जुलाई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्टूबर, 2018

अफ्रीका पहुंचा महासम्मेलन का निमन्त्रण

कीनिया, युगांडा, घाना एवं दक्षिण अफ्रीका से पहुंचें भारी संख्या में आर्यजन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी के चलते आर्य महासम्मेलन का निमन्त्रण पत्र अफ्रीकी देशों में पहुंचा। नैरोबी केन्या में आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता श्री सुरेश सोफात जी ने की। दक्षिण अफ्रीका से डॉ. रामबिलास जी (प्रधान) आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका, (महामंत्री) अनिल कपिला आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका एवं आर्य स्त्री समाज की (प्रधान) रेखा कोचर जी समेत अनेकों आर्य महानुभाव भारी संख्या में उपस्थित रहे। इस अवसर पर आर्य समाज के कार्यों पर चर्चा के साथ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन पत्र भी भेंट किया गया और अनेक आर्य

– शेष पृष्ठ 7 पर

नेपाल के आर्यों की विशाल उपस्थिति अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में

बृहत रूप से चल रही महासम्मेलन की तैयारी के चलते नेपाल में सम्पर्क अभियान किया गया। नेपाल की राजध ाानी काठमांडू समेत नेपालगंज, झापा और विराटनगर में नेपाल आर्य समाज की ओर से बैठकें आयोजित की गई। जिसमें दिल्ली में होने वाले आर्य महासम्मेलन में बड़ी संख्या में आर्यजनों की उपस्थिति का आह्वान किया गया तथा राजधानी काठमांडू के महेश्वरी सदन में आयोजित नेपाल में आर्य समाज के संस्थापक श्री माधवराव जोशी जी का स्मरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने आर्यजनों को आह्वान करते हुए कहा कि नेपाल और भारत आर्यों की जन्म भूमि रही है हमारी सांझी संस्कृति, सांझी सभ्यता और हमारी वैदिक रीति-नीति हमेशा एक रही है। इस अवसर पर नेपाल आर्य समाज के प्रधान श्री कमला कान्त आत्रेय ने कहा कि दो वर्ष पूर्व नेपाल में हुए आर्य महासम्मेलन के पश्चात् आर्य समाज की विचारधारा तेजी से नेपाल में फैल रही है। दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य

– शेष पृष्ठ 7पर

काठमांडु (नेपाल) में महासम्मेलन के लिए आयोजित बैठक में बैनर का प्रदर्शित करते श्री सुरेशचन्द्र आर्य, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद), मानवप प्रसाद उपाध्याय, कमला कांत आत्रे एवं अन्य कार्यकर्ता। इस अवसर पर उपस्थित आर्यसमाज के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं से भरा हॉल।

– शेष पृष्ठ 3 पर

वेद-स्वाध्याय

देवों की महती महिमा

क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेना: पतयन्त्या दिश:।
न मर्डिता विद्यते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत।। - ऋ. 10/64/2
ऋषि: गय: प्लात:।। देवता - **विश्वेदेवा:।।** छन्द: **जगती।।**

शब्दार्थ- **हृत्सु धीतय:** = हृदय में धरे हुए **क्रतव:** = सङ्कल्प **क्रतूयन्ति** = (देवों का) सङ्कल्पन कर रहे हैं, **वेना:** = प्रेममयी कामनाएं, इच्छाएं **वेनन्ति** = (देवों की) कामना कर रही हैं, चाह रही हैं और **दिश:** = (देवों के सम्बन्ध में) निर्देश, प्रेरणाएं **आपतयन्ति** = इधर-उधर से आ रही हैं, पहुंच रही हैं। नि:सन्देह **एभ्य:** = इन देवों के **अन्य:** = सिवाय और कोई **मर्डिता** = सुख दे सकने वाला **न** = नहीं **विद्यते** = है, अत: **मे** = मेरी **कामा:** = सब कामनाएं, सब सङ्कल्प, अभिलाषा तथा प्रेरणाएं **देवेषु अधि** = देवों में ही **अयंसत** = नियमित हो गई हैं।

विनय - देवों की शरण में जाए बिना अब मुझे चैन नहीं मिल सकता। ज्ञान ओर प्रकाश की इस दैवी अवस्था में ही सुख है। संसार में और कहीं सुख नहीं है। लोग भले ही मोह, आलस्य और निष्क्रियता में भी सुख मानते हों, पर मुझे तो यह तामसिक अवस्था सह्य नहीं है। जो दूसरे रज:-प्रवृत्त लोग सुख पाने के लिए दिन-रात विषयों में दौड़धूप कर रहे हैं उनकी उस आसुरी अवस्था से भी मेरा जी घबराता है। उनका यह उत्तेजनापूर्ण 'सुख' मुझे काटता है, दु:खरूप लगता है। सचमुच सुख तो दैवीभाव में रहने में ही है। सुख 'सत्त्व' का ही धर्म है और देवलोग (द्युलोक) की ही वस्तु है। तब देवों के बिना और कहां से हमें सुखमिल सकता है? इसलिए अब मैं सदा दैवीभाव में , सदा देवसंसार में ही रहना चाहता हूं। यद्यपि मेरे हृदय में धरे हुए नाना सङ्कल्प सङ्कल्पित हुआ करते हैं, उठा करते हैं, नाना प्रेममयी कामनाएं अपने विषय को चाहती हुई उदय होती हैं और नाना निर्देश व प्रेरणाएं इधर-उधर से आती रहती हैं, परन्तु अब मैं अपने इन सब सङ्कल्पों, कामनाओं और प्रेरणाओं को देवों में ही नियमन करता हूं। नियम और संयम द्वारा अपनी सब कामनाओं को देवसंसार से बाहर नहीं जाने देता। मेरे अन्दर जो इन्द्रिय आदि देव, मन के सात्त्विक अक्लिष्ट- वृत्तिरूप देव तथा सूक्ष्म संसार के देव हैं, एवं बाहर के सच्चे सरल ज्ञान-प्रकाश वाले पुरुष-देव तथा सत्य नियमों से चलनेवाले अग्नि आदि प्राकृतिक देव हैं, इन्हीं के विषय में अब मेरे सब हृदयस्थ सङ्कल्प सङ्कपन कर रहे हैं, उन्हें ही ये मेरी सब प्रेममयी अभिलाषाएं चाह रही हैं और उन्हीं के समबन्ध में अब मुझमें नाना प्रकार के निर्देश व प्रेरणाएं आती व उठती रहती हैं। मैं और क्या करूं? इन देवों के सिवाय और कोई इस संसार में सुख दे सकनेवाला नहीं है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज के कारण कैसे बचा अफ्रीका में हिन्दू समुदाय

....अफ्रीका के हिन्दू समुदाय का सबसे बड़े रूप में मनाया जाने वाला त्यौहार ताजिया था। मुहर्रम के दौरान हिन्दू समुदाय ताजिये का जुलूस निकाला करते थे। यह देख वहां पहुंचे आर्य समाज के विद्वान स्वामी शंकरानन्द को बड़ी निराशा हुई हृदय दु:ख से भर आया कि अपने उत्सवों को भूल आज यहाँ हिन्दुओं का सबसे बड़ा उत्सव ताजिया बन चुका है। स्वामी जी ने लोगों की चेतना जगाने का निर्णय लिया और अप्रैल 1910 में, स्वामीजी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जन्म का जश्न मनाने के लिए डरबन की सड़कों पर एक रथ जुलूस का आयोजन किया।.....

भारतीय उपमहाद्वीप से निकली आर्य समाज की वैदिक विचाधारा देश-विदेश जहाँ भी गयी अपने साथ लेकर गयी अपनी वेदवाणी, अपनी भाषा और सत्य सनातन वैदिक धर्म की वह जीवंत संस्कृति जो समस्त मानव जाति पर सहिष्णुता के साथ उद्धार, उपकार का कार्य करती है।

देखा जाये तो महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाएं भारतीय भूभाग से निकलकर दक्षिण अफ्रीका में 20वीं सदी के आरम्भ में पहुँचीं। दक्षिण अफ्रीका में जाने वाले पहले आर्य समाजी भाई परमानंद 1905 में पहुंचे थे। अपने चार महीने के प्रवास के दौरान, उन्होंने जोहान्सबर्ग, प्रिटोरिया और केप टाउन की यात्रा की थी। वह अंग्रेजी और हिन्दी दोनों के प्रखर वक्ता थे। उन्होंने हिन्दू संस्कृति, धर्म, भारतीय सभ्यता, ईश्वर में विश्वास, अपने समारोह, मातृभाषा हिन्दी और शिक्षा के महत्व पर भाषण दिए। उन्होंने अपने त्यौहारों के महत्व पर जोर दिया और तब से वहां दीपावली को हिन्दुओं के त्यौहार के रूप में पहचाना जाने लगा है। उन्होंने भारतीयों के बीच हिन्दू धर्म को मजबूत करने के लिए जमीनी आर्य समाज समितियों की स्थापना की और विभिन्न हिन्दू समूहों को एक मंच पर लाने का कार्य करने के साथ भारतीयों को अपने संस्कृति एवं विरासत पर गर्व करने की शिक्षा दी तथा सामाजिक सुधार एवं शिक्षा के प्रसार का कार्य किया।

असल में वर्ष 1 9 08 से पहले अफ्रीका में हिन्दू समुदाय के लोगों को दीपावली मनाने का अधिकार नहीं था। आप लोग सुनकर आश्चर्य करेंगे कि उस समय अफ्रीका के हिन्दू समुदाय का सबसे बड़े रूप में मनाया जाने वाला त्यौहार ताजिया था। मुहर्रम के दौरान हिन्दू समुदाय ताजिये का जुलूस निकाला करते थे। यह देख वहां पहुंचे आर्य समाज के विद्वान स्वामी शंकरानन्द को बड़ी निराशा हुई हृदय दु:ख से भर आया कि अपने उत्सवों को भूल आज यहाँ हिन्दुओं का सबसे बड़ा उत्सव ताजिया बन चुका है। स्वामी जी ने लोगों की चेतना जगाने का निर्णय लिया और अप्रैल 1910 में, स्वामीजी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जन्म का जश्न मनाने के लिए डरबन की सड़कों पर एक रथ जुलूस का आयोजन किया। भीड़ उमड़ी स्वामी ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए लोगों को अपने उत्सवों के सही महत्व को समझाया।

स्वामीजी की मेहनत रंग लाई और परिणामस्वरूप दीपावली को हिन्दुओं के मुख्य त्यौहार के रूप में स्थापित किया गया। हिन्दुओं से अपने वैदिक धर्म पर गर्व करने का आग्रह किया और धार्मिक व्याख्यान, संस्कार और भारतीय स्थानीय भाषाओं के अध्ययन पर जोर दिया। वह श्रीराम के जन्म और हिन्दू कैलेंडर में योगिराज कृष्ण की महत्वपूर्ण तिथियों से जुड़े उत्सवों के साथ वैदिक संस्कृति को पुन: स्थापित करने में सफल रहे। साथ ही उन्होंने डरबन और पीटर्सबर्ग में वेद धर्म सभा की स्थापना भी की। उन्होंने गाय के लिए हिन्दुओं के मन में गहरे सम्मान पर प्रकाश डाला और गौहत्या को रोकने के लिए लड़ाई को लड़ा। स्वामी ने हिन्दू चेतना और उद्देश्य की एकता को बढ़ाने में बड़ी जीत हासिल की।

लोगों को राह मिली। धीरे-धीरे स्थानीय कार्यकर्ता पैदा होने लगे इसी में एक आर्य कार्यकर्ता थे पंडित भवानी दयाल जो 1912 में बीस वर्ष की उम्र में भारत से लौटे थे उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया और दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी के प्रचार की शुरुआत की। वह और उनकी पत्नी, गांधी के सत्याग्रह में भी शामिल थे और दोनों अंगेजों की कैद में थे। किन्तु 1916 में रिहा होते ही उन्होंने एक हिन्दी साहित्यिक सम्मेलन का आयोजन किया और अफ्रीका में दो स्थानीय हिन्दी भाषी समाचार पत्रों का प्रकाशन कराया। एक अन्य प्रचारक, स्वामी मंगलानंद पुरी, 1913 में नाताल ब्राजील गए। उन्होंने आर्य युवक सभा के तहत व्याख्यान दिए और अपने प्रवास के दौरान, उन्होंने आर्य समाज में शामिल होने वाले कई युवा पुरुषों को आकर्षित किया। 1920 के दशक की शुरुआत तक अफ्रीकी देशों में कई आर्य समाज स्थापित करा दिए गए थे।

इसके बाद तो मानो जैसे अफ्रीकी भूमि पर आर्य समाज की लहर चल पड़ी थी। उसी दौरान पंडित पूर्णानंद द्वारा युगांडा में आर्य समाज द्वारा एक बड़ी भव्य इमारत का निर्माण किया गया.।डी ए वी कॉलेज के प्रोफेसर रलामला होशियारपुर पंजाब से 1931 में अफ्रीका पहुंचे और वैदिक धर्म पर व्याख्यान दिए। इसके बाद 1934 में आर्य विद्वान पंडित आनंद प्रियजी, जो भारत के बड़ौदा के आर्य कन्या महाविद्यालय से लड़कियों के गाइड के एक दल के साथ पहुंचे, और शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन किया, राष्ट्रीय और धार्मिक गीत गाए और उनके बलशाली प्रभावशाली भाषणों के माध्यम से वैदिक धर्म की शिक्षाओं को फैलाया। 1937 में प्रोफेसर यशपाल ने योग की शक्तियों का प्रदर्शन किया। पंडित ऋषिराम ने 1937 और 1945 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया और वेदों, उपनिषद और गीता के आधार पर शिक्षाएं दीं।

उस समय यूगांडा आर्य समाज पूर्वी अफ्रीका में सबसे सक्रिय समाज था। आर्य समाज के कार्यों से प्रभावित होकर युगांडा के कंपाला में कालिदास मेहता जी ने एक विशाल भव्य ईमारत आर्य विद्यालय के रूप बनवाकर भेंट कर दी। लेकिन आर्य समाज की इन महान गतिविधियों को 70 के दशक में युगान्डा के सैनिक तानशाह इदी अमीन की मजहबी नजर ने कुचलने का कार्य किया। उसने गद्दी पर बैठते ही भारतीय मूल के सभी लोगों को युगांडा छोड़ने और आर्य समाज का काम समाप्त कर दिया। एशियाई मूल के हजारों लोगों को जो इस्लाम से भिन्न मत रखते थे जिनमे भारत का एक बहुत बड़ा हिन्दू समुदाय भी था देश से निकाल दिया गया, उनकी संपत्ति जब्त कर ली और अपने दोस्तों में बाँट दी। जब विश्व समुदाय ने इस घटना को उठाया तो समस्त मुस्लिम देशों ने एक स्वर में कहा था कि इस्लाम के बीच सिर्फ इस्लाम को मानने वाले ही रह सकते है। समय गुजरा लगभग एक दशक लम्बी चली इदी अमीन की मजहबी सत्ता के विनाश के बाद कुछ साल पहले फिर से आर्य समाज का कार्य शुरू हो गया है। आज वहां आर्य समाज अपने पूरे वेग से कार्य कर रहा है। वहां के आर्य समाजों आर्य शिक्षण संस्थानों पर लहराती ओ३म ध्वज पताका मन में आर्य समाज के प्रति अथाह गर्व की भावना भर देती है कि आर्य समाज के उपकार से केवल भारतीय उपमहाद्वीप ही ऋणी नहीं हैं बल्कि अफ्रीका में बसे हिन्दुओं पर भी आर्य समाज का कितना बड़ा उपकार है। - ***सम्पादक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

इन पादरियों के गुनाह कौन माफ करेगा?

....अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों का दुरुपयोग, शारीरिक सुख प्राप्त करने की वजह से दुनिया भर के कैथोलिक चर्च आज सैक्स स्कैंडलों की बड़ी बदनामी झेल रहे हैं। समूचे यूरोप और अमेरिका सहित अनेक देशों में पादरियों के सैक्स किस्से लोगों की जुबान पर हैं।.....

अपने किये गुनाह की माफी के लिए धार्मिक समुदाओं में अलग-अलग रिवाज हैं। ईसाई कहते हैं कि अपने पाप प्रत्येक रविवार को चर्च में जाकर कन्फैस करके खत्म कर दो। इसके लिए बाकायदा चर्च में एक किनारे पर एक बंद सा केबिन होता है। जिसे कन्फेशन रूम या केबिन कहा जाता है। केरल के चर्च में एक ईसाई महिला भी अपने गुनाह की माफी मांगने इसी केबिन में गयी थी। पता नहीं जीसस ने उसकी फरियाद सुनी या नहीं सुनी! लेकिन एक पादरी ने केबिन के अंदर बैठकर उसका कबूलनामा सुना था, वह उल्टा उस औरत को ब्लैकमेल करने लगा। उसने महिला का यौन शोषण किया फिर अन्य पादरी भी इसमें शामिल हो गए। यह सब पिछले कुछ सालों से चल रहा था। अब जाकर महिला के पति को ये बात मालूम चली। उसने चर्च को शिकायती चिट्ठी भेजी। जब चर्च के अधिकारियों के लिए इस सच से मुंह मोड़ना मुश्किल हो गया, तो अधिकारियों के पास अपने पंथ की इज्जत बचाने के लिए इसे स्वीकार करने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा ताकि चर्च के अनुयायियों को दूसरे लोगों से मुंह छिपाते न फिरना पड़े इस कारण पांचों आरोपी पादरियों को छुट्टी पर भेज दिया है।

पिछले कुछ सालों में कई कथित बाबाओं की सैक्स लीलाएं आए दिन सुर्खियों में रहीं। जहाँ तक इन बाबाओं का प्रश्न है, वे अपने अलग-अलग साम्राज्य चलाते हैं। वे किसी धार्मिक संस्थागत व्यवस्था के हिस्से नहीं होते। इस कारण, दोनों की तुलना अनुचित होगी परन्तु दोनों मामलों में जो समानता है, वह यह है कि जिन लोगों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करेंगे, वे स्वयं की वासनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाते।

अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों का दुरुपयोग, शारीरिक सुख प्राप्त करने की वजह से दुनिया भर के कैथोलिक चर्च आज सैक्स स्कैंडलों की बड़ी बदनामी झेल रहे हैं। समूचे यूरोप और अमेरिका सहित अनेक देशों में पादरियों के सैक्स किस्से लोगों की जुबान पर हैं। अगर केवल कल तक में झांक कर देखें तो चर्च के नाम पर भोगविलास में लिप्त इन तथाकथित ईश्वर पुत्रों की सूची आसमान की दूरी तरह लंबी होती चली जाएगी। फरवरी 2017 में बीबीसी की रिपोर्ट में दिया गया था कि आस्ट्रेलिया में एक जांच के दौरान पता चला है कि देश के करीब 40 फीसदी चर्च पर बच्चों के यौन शोषण के आरोप है। बच्चों के यौन शोषण से जुड़े मामलों पर नजर रखने वाली रॉयल कमीशन के पास 1980 से 2015 के बीच करीब 4,500 लोगों ने यौन शोषण होने की शिकायत दर्ज कराई थी।

इसके बाद वेटिकन के तमाम प्रयासों के बावजूद पादरियों के कुकर्मो की पोल खुलने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। पादरियों के यौन दुराचार की बातें उजागर होते देख चर्च को अपनी चूलें हिलती दिख रही हैं इसी वजह से कुछ साल पहले 16 वें पोप बेनेडिक्ट जगह-जगह जाकर प्रार्थना करने के बजाय अपने लंपट पादरियों के कुकर्मो के लिए माफी मांगते नजर आये थे। पीड़ित लोगों से मिल रहे थे और बेहद शर्मिंदगी व दु:ख जता रहे हैं। कारण सदियों तक जो बात ढकी रहती थी, अब छिपाए छिप नहीं पा रही और चर्च का यौनसुख अब संकट में है। क्योंकि अब आम जनता के नैतिकता के पैमाने बदल गए हैं।

हालाँकि चर्चो का ये यौनसुख नया नहीं है। काफी समय से चर्च अपने पादरियों की नाजायज संतानों की समस्या को भी झेल रहा है। अमेरिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया में कई औरतें पादरियों से गर्भवती होकर उनके अवैध बच्चों को पालने पर मजबूर हैं। कई चर्चो से इन औरतों से समझौते पर साइन करवा कर मुआवजे दे दिए गए हैं। पिछले दिनों चिली में कैथलिक चर्च ने कथित रूप से बाल यौन शोषण में संलिप्त होने पर 14 पादरियों को निलंबित कर दिया था। चर्च के सैक्स स्कैंडलों की बदनामी से वैटिकन सिटी बार-बार मीडिया की आलोचना भी करता रहा है लेकिन वैटिकन इन मामलों को रोक नहीं पा रहा है। चर्चो के सैक्स किस्से घटने के बजाय बढ़ते जा रहे हैं। मार्च 2010 में न्यूयार्क टाइम्स की सैक्स स्कैंडलों पर कवरेज के लिए आलोचना की गई थी कारण अखबार ने 200 बहरे बच्चों के साथ एक पादरी की दुराचार की खबरें प्रकाशित की थीं।

अपने देश में ही देखें तो 2017 में केरल के कन्नूर जिले में एक कैथलिक पादरी पर एक नाबालिग लड़की के साथ बलात्कार करने का इल्जाम लगा था। आरोप था कि पादरी ने उस लड़की का कन्फेशन सुनकर उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया था। इसी वर्ष पटना में एक पादरी चंद्र कुमार कथित तौर पर कई महिलाओं का धर्म परिवर्तन करा कर उनका यौन शोषण करता था। जिन्हें पिछले 6 महीनों से वह अपनी हवस का शिकार बना रहा था। इसी दौरान त्रिसूर में एक कैथोलिक पादरी को नौ वर्ष की एक लड़की द्वारा लैंगिक शोषण का आरोप लगाए जाने के बाद उसे गिरफ्तार किया गया था।

ये तमाम रिपोर्ट किसी को भी शर्मसार करने के लिए काफी हैं। लेकिन इसके बावजूद देश के पादरी चर्चो और पादरियों के कारनामों पर चिंता करने के बजाय देश की राजनीति को लेकर चिंतित दिखाई दे रहे हैं। अपने पादरियों को चिट्ठी लिखकर केंद्र के सत्तारूढ़ दल को 2019 के चुनाव में हराने की प्रार्थना करने की अपील कर रहे हैं। अपनी आंतरिक शुद्धि की प्रार्थना छोड़कर सत्ता परिवर्तन की प्रार्थना पर जोर दे रहे हैं। हो सकता कल ये पांचो आरोपी पादरी फादर जॉब मैथ्यू, फादर अब्राहम वर्गीज, फादर जेस के जॉर्ज, फादर जॉनसन वी मैथ्यू और फादर जीजो जे अब्राहम भी कन्फेशन रूम में अपने किये कृत्यों की माफी मांग लें और चर्च की तरफ से मामला रफा-दफा हो जाये पर लोगों के मन में उफन रहे सवाल कैसे रफा-दफा होंगे कि इन पादरियों के गुनाह कौन माफ करेगा?

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

आंधियां चलती रहीं, आशियां बनते रहे

गतांक से आगे -

रात का मेहमान :

वह कहाँ गया? अभी तो मुझसे बातें कर रहा था।''

कल्पना समझ न पाई कि मां को अचानक क्या हो गया है। वह घबराकर रोने लगी। तभी आज़ाद कोने से निकल आए और बोले, ''मैं तो यहीं हूँ। ऊपर से किसी की आहट सुनकर कोने में छिप गया था।''

कल्पना ने आज़ाद की ओर देखा और मां से पूछा, ''ये कौन हैं, मां?''

''रात का मेहमान। बड़ा योग्य और समझदार व्यक्ति है।''

''योग्य और समझदार हूँ, तभी तो सारे दिन से भूखा हूँ। आज़ाद ने सहज भाव से कहा।

''अरे बेटी, मैं तो भूल ही गई। इन्हें कुछ खिलाओ-पिलाओ।'' वृद्धा ने कहा।

एक साफ़-सुथरी काँसे की थाली में पराँठे और दही-बूरा लेकर कल्पना आई और उसे वहीं तिपाई पर रख दिया। हाथ धोकर आज़ाद खाने बैठे, तो एक-एक पराँठे के दो-दो कौर करने लगे। कल्पना को हँसी आ गई।

'भूख में ऐसा ही होता है। कभी भूखी रही हो?' आज़ाद ने पूछा।

'हाँ, हमारे लिए भूखे रहना कोई नयी बात नहीं, और आधे पेट तो अक्सर ही रहते हैं।' 'फिर भी रात बारह-बारह बजे तक पढ़ना!' 'परीक्षा निकट है।'

'किस कक्षा में पढ़ती हो?'

'एम.ए. द्वितीय वर्ष।'

'विषय क्या है तुम्हारा?' 'संस्कृत।'

'शाबाश! संस्कृत पढ़ती हो, तभी तो आधे पेट रहती हो!'

खाना खाने के बाद आज़ाद ने दो लोटे ठंडा जल पिया। कल्पना ऊपर पढ़ने चली गई। वृद्धा ने बताया कि कल्पना बीस रुपये मासिक की एक ट्यूशन करती है। उसी में किसी प्रकार गुज़र-बसर हो जाती है। उसकी शादी भी करनी है। लड़का तो है नज़र में, लेकिन पैसे की समस्या मुँह बाये खड़ी है।

वातावरण में कुछ उदासी-सी छा गई। तभी जी.पी. ओ की घड़ी ने टन-टन करके रात के दो बजाए। आज़ाद ने जाना चाहा। वृद्धा ने कभी-कभी मिलते रहने के लिए कहा। आज़ाद ने फिर आने का वचन दिया और कल्पना को बुलाने के लिए कहा। वह अभी तक पढ़ रही थी। मां की आवाज़ सुनकर तुरन्त नीचे आई और बोली, 'बाण की 'कादम्बरी' पढ़ रही थी। बड़ी कठिन रचना है।'

'संसार में कोई काम कठिन नहीं। मन लगाकर पढ़ो और प्रथम श्रेणी लाओ। यही मेरा आशीर्वाद है।' आज़ाद ने कहा।

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

योग गुरु स्वामी रामदेव का अभिनन्दन

आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने संत निवास पर श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी से शिष्टाचार भेंट की। इस मौके पर आर्य समाज की महिला योग साधिकाएं भी साथ में थीं। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा वेद मंत्रोच्चार पूर्वक योग गुरु का ओ३म् से सुसज्जित केसरिया पगड़ी पहनाकर तथा गायत्री मंत्र अंकित शॉल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने योग गुरु स्वामी रामदेव को ओ३म् स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। जिला प्रधान श्री अर्जुन देव जी ने स्वामी रामदेव जी से निवेदन किया कि आपके जीवन पर आधारित धारावाहिक रामदेव एक संघर्ष में आपके द्वारा सत्यार्थ प्रकाश को प्रेरणादायी ग्रन्थ बतलाने पर एक सप्ताह से भी कम समय में डेढ़ लाख से अधिक सत्यार्थ प्रकाश बिक गये। यदि विश्व योग दिवस के अवसर पर अपने प्रवचन में आप सत्यार्थ प्रकाश का उल्लेख करें तो लाखों, करोड़ों लोगों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। अभिनन्दन समारोह में आर्य समाज रेजोनेंस के प्रमुख श्री आर.के. वर्मा को पूज्य स्वामी रामदेव जी के हाथों से महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी संस्करण 'लाइट ऑफ ट्रूथ' तथा गायत्री मंत्र के भावार्थ सहित स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।-**अरविन्द पाण्डेय, कार्यालय मंत्री**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25, 26, 27, 28 अक्टूबर 2018

सम्मेलन स्थल :- **स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85**
विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग
तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।
सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898

बंगाल की धरा पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की हुंकार

बंगाल के सभी हिस्सों से दिल्ली आर्य महासम्मेलन में पहुंचेंगे आर्य महानुभाव - दीनदयाल गुप्त

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी के चलते कोलकात्ता में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की निमंत्रण पत्र बैठक सम्पन्न हुई। आर्य जनों की भारी संख्या में उपस्थिति के बीच बंगाल सभा के (प्रधान) श्री दीनदयाल दयाल गुप्ता जी की अध्यक्षता में बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। इस शुभ अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के (प्रधान) श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यो उठो यह समय अन्धविश्वास और पाखण्ड को मिटाने का है। यह समय वेद की ज्योति को समस्त संसार में दीप्तिमान करने का है। दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने महासम्मेलन में बंगाल के आर्यजनों की भारी उपस्थिति का आह्वान करते हुए कहा बंगाल की धरा से इतिहास ने कई बार करवट ली है मैं आर्यो से आह्वान करता हूं कि इस महत्त्वपूर्ण महासम्मेलन में बंगाल के सभी आर्यजन पहुंचकर वैदिक पताका फहराएं। इस अवसर पर श्री विनय आर्य समेत आचार्य योगेश शास्त्री एवं मंत्री जगदीश केडिया जी उपस्थित रहे बैठक में पूरे बंगाल से उपस्थित सभी आर्यजनों ने महासम्मेलन में हाथ उठाकर भारी संख्या में पहुँचने का संकल्प लिया।

- जगदीश प्रसाद केडिया, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के आर्यसमाज बड़ा बाजार में आयोजित कार्यकताओं को सम्मेलन के पहुंचने का आह्वान करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, बंगाल सभा के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्त, मन्त्री जगदीश केडिया, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य। महासम्मेलन के पोस्टर को बंगाल में जारी करते प्रमुख अधिकारीगण एवं नीचे कोलकाता के विभिन्न आर्यसमाजों से उपस्थित अधिकारी एवं कार्यकर्तागण

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

सभी आर्य समाजें व आर्य संस्थाएँ विज्ञापन अवश्य भेजें

यदि आप सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी आर्यसमाज / संस्था की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित करना चाहते है, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो। स्मारिका 15 अक्टूबर तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साईज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7.5"×10" का एवं आधे पृष्ठ का साईज 7.5"×5" होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाईन हमें 30 सितम्बर 2018 तक अवश्य भिजवा दें। दरें निम्न प्रकार हैं -

(श्वेत श्याम विज्ञापन)		(रंगीन- चार रंगों में विज्ञापन)	
1. चौथाई पृष्ठ	5000/-	4. चौथाई पृष्ठ	7500/-
2. आधा पृष्ठ	7500/-	5. आधा पृष्ठ	12500/-
3. पूरा पृष्ठ	10000/-	5. पूरा पृष्ठ	21000/-

कॉलर ट्यून से करें महासम्मेलन का आह्वान

'विश्वमार्यम् का फिर से उद्घोष करें'

आर्यमहासम्मेलन गीत 'विश्वमार्यम् का फिर से उद्घोष करें' को अपने मोबाइल की कॉलर/रिंग टोन बनाएं। अपने मोबाईल में सम्मेलन गीत की ट्यून सैट करने हेतु दिए गए कोड को मैसेज करें अथवा निम्न लिंक पर क्लिक करें-

http://mobilemanoranjan.com/Hindi/Album/Arya-Udghosh

airtel	Airtel	DIAL 5432116538214	Idea	Idea	DIAL 5678910497215
RELIANCE	SetMyTune	SMS CT 10497215 to 51234	BSNL East & South	BSNL E & S	SMS BT 10497215 to 56700
BSNL North & West	BSNL N & W	SMS BT 7104896 to 56700	AIRCEL	Aircel	SMS DT 7104896 to 53000
vodafone	Vodafone	SMS CT 10497215 to 56789	MTNL	MTNL	SMS PT 10497215 to 56789
TATA	TATA	SMS CT 10497215 to 543211			

आर्य महासम्मेलन की कॉलर ट्यन को सीधे किसी भी सर्च इंजन में bit.ly/2t7kRqr टाइप करके डाउनलोड भी किया जा सकता है।

सम्मेलन गीत को अपनी कॉलर ट्यून बनाने के लिए डायल करें -
आईडिया : 9891871921 या वोडाफोन: 8929747971 और ★ दबाए तथा आए हुए मैसेज पर रिप्लाई करें। ट्यून आपके मोबाईल में सैट हो जाएगी।
नियमानुसार अपेक्षित शुल्क देय होंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018

25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

तद्नुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी २०७५

स्थान : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी, दिल्ली

दिल खोलकर सहयोग करें

अक्टूबर-2018 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप में बहुत बड़ा सम्मेलन होगा। सम्पूर्ण विश्व से 2 लाख से अधिक आर्य जनों के इसमें पहुँचने की आशा है। इसे देखते हुए सम्मेलन की सभी व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के लिए आप सबका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। सभी आर्यजनों, आर्य संस्थाओं, आर्य समूहों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य महिला सभाओं/संस्थाओं से निवेदन है कि अपनी सहयोग राशि चैक/बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर भेजने की कृपा करें। यह सम्मेलन आप का है और आप के सहयोग से ही यह हर प्रकार से अद्वितीय बन सकता है। कृपया अपनी सहयोग राशि **'संयोजक'** के नाम **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन,15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।**

- संयोजक

ओ३म्

दिल्ली चलो

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

महर्षि दयानन्द सरस्वती

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018

तदनुसार कार्तिक कृ० १, २, ३, ४ विक्रमी सम्वत् २०७५

विश्व शान्ति यज्ञ, योग तथा सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर तपोनिष्ठ संन्यासियों एवं वैदिक विद्वानों के प्रेरणास्पद उद्बोधन एवं प्रवचन

लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली

निवेदक

सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9824072509

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष
स्वागत समिति
+91 11 25937987

प्रकाश आर्य
मंत्री
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9826655117

धर्मपाल आर्य
सम्मेलन संयोजक
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9810061763

उप प्रधान : डॉ. राधकृष्ण वर्मा, आचार्य विजय पाल, सोमदत्त महाजन।
उपमन्त्री : वाचोनिधि आर्य, देवराज आर्य, प्रदीप आर्य, दयाराम बसैये।
कोषाध्यक्ष : श्री अनिल तनेजा ।

मिठाईलाल सिंह
परामर्शदाता
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

उप प्रधान : शिव कुमार मदान, ओम प्रकाश आर्य, श्रीमती मृदुला चौहान। महामन्त्री : विनय आर्य
मन्त्री : अरुण प्रकाश वर्मा, सुखबीर सिंह आर्य, सुरेन्द्र आर्य, शिवशंकर गुप्ता, वीरेन्द्र सरदाना, सुरेशचन्द्र गुप्ता।
कोषाध्यक्ष : श्री विद्यामित्र ठुकराल

संयोजक एवं व्यवस्था समिति के माननीय सदस्यगण

मा. रामपाल आर्य (प्रधान), उमेद शर्मा (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
सुदर्शन शर्मा (प्रधान), प्रेम भारद्वाज (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
मिठाईलाल सिंह (प्रधान), अरुण अबरोल (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई
स्वामी धर्मानन्द (प्रधान), वीरेन्द्र पाण्डा (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा

दीनदयाल गुप्त (प्रधान), जगदीश प्र. केडिया (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिम बंगाल
सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान), हंसमुख परमार (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात
आचार्य अंशुदेव (प्रधान), दीनानाथ वर्मा (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़
राकेश चौहान (प्रधान), रविकान्त (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर

डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान), माधवराव देशपाण्डे (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र
इन्द्र प्रकाश गांधी (प्रधान), प्रकाश आर्य (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत
डॉ. धीरज आर्य (का. प्रधान), स्वामी धर्मेश्वरानन्द (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
विजय सिंह भाटी (प्रधान), सुधीर शर्मा (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

प्रबोध चन्द्र सूद (प्रधान), करमवीर सिंह (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश
भारतभूषण त्रिपाठी (प्रधान), चन्द्रशेखर प्रसाद (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड
सत्यवीर शास्त्री (प्रधान), अशोक यादव (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र.व विदर्भ
रमाकान्त सिंघल (प्रधान), लोकेश आर्य (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा असम

सुभाष अष्टीकर (प्रधान), डॉ. वासुदेव राव (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक
संजीव चौरसिया (प्रधान), व्यासनन्दन शास्त्री (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार
डॉ. विनय विद्यालंकार (प्रधान), नरेन्द्रलाल आर्य (मन्त्री) — आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड
धर्मपाल गुप्ता (उप प्रधान), जोगेन्द्र खट्टर (महामन्त्री) — अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, आर्य नेता, उ.प्र.
श्री विवेक शिनॉय, संयोजक, केरल अभियान समिति
डॉ. धनञ्जय जोशी, संयोजक, तमिलनाडु अभियान समिति
सुरेश आर्य, संयोजक, अन्दमान निकोबार अभियान समिति
डॉ. धर्मतेजा, संयोजक, आ.प्र. व तेलंगाना अभियान समिति

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898

Veda Prarthana - II Regveda - 13

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्।। यजुर्वेद 2/34

Oorjam vahantih amritam ghrtam payah kilalam paristrutam. swatha stha tarpayata me pitrn.

(Yajur Veda 2:34)

May We Serve Our Elders with All Our Abilities, Body, Mind and Deeds

- Acharya Gyaneshwarya

In the Vedic scriptures, ingratitude or being ungrateful, and not acknowledging and thanking those who have helped us grow up and succeed in life, is considered a major fault and deficiency in a person's character. Many persons are responsible in large or small ways, and both in a visible or invisible (hidden) mann er in the successful growth and development of a person so that he/she becomes a virtuous responsible adult, These persons include mother father, grandparents, brothers, sisters, uncles, aunts, teachers, friends, neighbors, and indirectly the community, village, town, and the nation. Their important contribution is given through physical, mental, financial, and spiritual means. All of these persons collectively help the new generation of children, Youth and young adults receive good education, learn acceptable moral rules of the society, differentiate right from wrong and what is legal vesus illegal. They encourage and inspire the new generation to become responsible adults. If in a community, the new generation does not receive such encouragement and/or inspiration from their elders then that community does not progress or succeed well.

In turn, as the new generation persons mature and become adults they become indebted and owe a debt to the all of the older generation persons mentioned in the abouve paragraph especially parents, grandparents, and teachers. To pay back the debt, new generation must give great respect, help, and take care of the various needs of the elders. A person who does not return help in kind to those who helped him/her in the hour of need is considered to have a great character fault of being ungrateful and untrustworthy.

In Vedic culture, giving true respect and service to elders is called shraadh, and serving and helping the eldes is called tarpann. Doing shraadh is an obligation for the younger generation and fulfilling it with devotion gives a person inner peace and fulfillment. When one takes care and serves elders, in turn the blessing of the elders give the person wisdom, inner strength, happiness, long life, and honor in the society. However, Shraadh and tarpann can be only be done for living parents, grandparents, relatives, teachers, mentors and learned guests, not deadpersons. To fulfill the desires and neeeds of elderrs one should provide appropriate high quality foods such as fruits, vegetables, milk, butter, honey, sweets as well as medicines and other health promoting needs e.g. ayurvedic, massage or physical therapy. These good helpful practices are in sharp contrast to the misguided current rituals practiced by many Hindus where theyfeed and give donations to chosen Brahmins/priests, with the mistaken belief/notion that somehow these will be magically transported for the benefit of the souls of their long departed (dead) parents and relatives.

When in a society virtuous learned persons, brahmins, priests, scholars, and other selfless saintly persons visih homes of different persons and teach the members of the host family about what is true dharma, justice, high ideals and how one can live and follow them in daily life, then a society progresses towards peace, prosperity, strength and working cohesively. At such occasions, the distinguished visitors get an opportunity to give guidance to the host family, answer their querries, and help remove their doubts. It is only in this manner that the members of a society develop deep faith in God, His Omnipresence and in His Judging all our karmas to give appropriate awards. These in turn, make people have good moral and virtuous values, become hard working, generous, kind and have patriotic values for their society and nation. When in a society virtuous learned persons do not teach and promote moral values to the societal members, then the latter give up virtuous traditions and moral rules. Instead people are more likely to become primarily self-centered, undisciplined, more interested in fashion and physical display, full of lust, lazy, callous, and some even corrupt and/or exploiters of others.

Dharmic leaders have knowledge of scriptures and meditation experiences, while other learned persons have many types of knowledge and wisdom because of their education, work and life experiences and/or success in business. In their life journeys, such persons through their experiences have found solutions to many types of problems, difficulties, obstacles, and mistakes people encounter in life. They can easily pass on their wisdom and life experiences to the younger generation, so that the latter are aware, stay alert and do not repeat the same mistakes, and when difficulties do arise, they can easily solve them. Unfortunately, now a days in many cultures the younger generation live far away from parents and relatives and have much less contact with their elders, thus missing out on the learning from the elders' experience especially related to morality, traditions and good social values. The old- fashioned joint family and frequent contact with the extended family led to security, trust, faith, love, fearlessness in the family members, society and the nation. On the other hand, the breakdown of the joint family due to job requirements and under the pretext of modernity and independence has often led to the loss of above stated benefits. Moreover, it has resulted in the loss of personal emotional security and support, divorce that is more frequent, increase in single parenthood and psychiatric illness.

Dear God, ew pray to You to give us wisdom to be close to our elders and live with or near them and have frequent contacts so that we may learn and gain wisdom from their experience. May we never beome ungrateful, and always take care of the needs of our elders so that we can return in kind the help they gave us in the hour of our needs. May we serve our elders with all our abilities, body, mind and deeds, so they may bless and inspire

us to always stay away from bad or sinful deeds and instead adopt virtuous values in life, so that we may enjoy peace, happiness and bliss in our lives.

These misguided current rituals are actually frauds perpetrated by greedy priests using scare tactics that if the host family does not perform such fraudulent rituals, their parents' or relatives' long departed souls will suffer terribly in afterlife.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

गतांक से आगे....

केरल विश्वविद्यालय
कर्मणि व्यज्यते प्रज्ञा

राजस्थान विश्वविद्यालय
धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा

प. बंगाल रा.न्यायिक विज्ञान वि.वि.
युक्तिहीने विचारे तु धर्महानिः प्रजायते

वनस्थली विद्यापीठ
सा विद्या या विमुक्तये

एन. सी. ई. आर. टी.
विद्ययाऽमृतमश्नुते

केन्द्रीय विद्यालय
तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
असतो मा सद् गमय

प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, त्रिवेन्द्रम-
कर्म ज्यायो हि अकर्मणः

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
धियो यो नः प्रचोदयात्

संस्कृत ध्येय वाक्य (59)

गोविंद बल्लभपंत अभियांत्रिकी महाविद्यालय,पौड़ी (उत्तराखण्ड)
तमसो मा ज्योतिर्गमय

मदनमोहन मालवीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, गोरखपुर
योगः कर्मसु कौशलम्

भारतीय प्रशासनिक कर्मचारी महाविद्यालय, हैदराबाद
संगच्छध्वं संवदध्वम्

इं.वि.वि. राष्ट्रीय विधि विद्यालय
धर्मो रक्षति रक्षितः

संत स्टीफन महाविद्यालय, दिल्ली -
सत्यमेव विजयते नानृतम्

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान -
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

विश्वेश्वरैया राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर -
योगः कर्मसु कौशलम्

-आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय,
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

मनुष्यों को खाने को नहीं मिलता

यह युग ज्ञान तथा जनसंख्या के विस्फोट का युग है। कोई भी समस्या हो जनसंख्या की दुहाई देकर राजनेता टालमटोल कर देते हैं।

1967 ई. में गो-रक्षा के लिए सत्याग्रह चला। यह एक कटु सत्य है कि इस सत्याग्रह को कुछ कुर्सी-भक्तों ने अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिए प्रयुक्त किया। उन दिनों हमारे कालेज के एक प्राध्यापक ने अपने एक सहकारी प्राध्यापक से कहा कि मनुष्यों को तो खाने को नहीं मिलता, पशुओं का क्या करें ?

1968 में, मैं केरल की प्रचार-यात्रा पर गया तो महाराष्ट्र व मैसूर से भी होता गया। गुंजोटी औराद में मुझे भी कहा गया कि इधर गुरुकुल कांगड़ी के एक पुराने स्नातक भी यही प्रचार करते हैं। मुझे इस प्रश्न का उत्तर देने को कहा गया। जो उत्तर मैंने अपने प्राध्यापक बन्धु को दिया था वही उत्तर महाराष्ट्र में दिया।

मनुष्यों की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है यह एक सत्य है, जिसे हम मानते हैं। मनुष्य के लिए कुछ पैदा करोगे तो ईश्वर मूक पशुओं के लिए तो उससे भी पहले पैदा करता है। गेहूँ पैदा करो अथवा मक्की अथवा चावल, आप गन्ना की कृषि करें या चने की या बाजरा, जवारी की, पृथिवी से जब बीज पैदा होगा तो पौधे का वह भाग पहले उगेगा जो पशुओं ने खाना है। मनुष्य के लिए दाना तो बहुत समय के पश्चात् पककर तैयार होता है।

वैसे भी स्मरण रखो कि मांस एक उत्तेजक भोजन है। मांस खानेवाले अधिक खाते हैं। अन्न की समस्या इन्हीं की उत्पन्न की हुई है। घी, दूध, दही आदि का सेवन करनेवाले रोटी बहुत कम खाते हैं। मक्खन निकली छाछ का प्रयोग करनेवाला भी अन्न थोड़ा खाता है। इस वैज्ञानिक तथ्य से सब सुपरिचित हैं, अतः मनुष्यों के खाने की समस्या की आड़ में पशु की हत्या के कुकृत्य का पक्ष लेना दुराग्रह ही तो है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

दक्षिण अफ्रीका.....

महानुभावों ने आने की इच्छा जताई।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के (प्रधान) रामबिलास जी, आर्य समाज युगांडा के (प्रधान) श्री कुलदीप ओबेरॉय जी, धर्माचार्य धर्मदेव जी, (कोषाध्यक्ष) श्री अमित जी एवं अन्य आर्य महानुभावों को आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण पत्र श्री विनय आर्य जी (उपमंत्री) सार्वदेशिक सभा ने भेंट किया। युगांडा के कंपाला में पूर्वजों की विरासत आर्य समाज द्वारा संचालित शानदार विद्यालय में भी गये।

सुझाव आमन्त्रित

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषि महानुभावों से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और उपयोगी बनाने के लिए उनके अनुभवों के आधार पर सुझाव आमन्त्रित किए जाते हैं। आपने वर्ष 2012 के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएं अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी की होगी।

अत: आपसे निवेदन है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल, ऐतिहसिक, अविस्मरणीय और भव्य बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें। आप चाहें तो ईमेल भी कर सकते हैं- **संयोजक**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001,
दूरभाष : 09540029044
Email:aryasabha@yahoo.com;
Web:www.aryamahasammelan.org;
www.thearyasamaj.org

चुनाव समाचार

आर्य सामज रामगली हरी नगर (घण्टाघर) नई दिल्ली

प्रधान – श्रीमती राजश्वरी आर्या
मन्त्री – श्री श्रीपाल आर्य
कोषाध्यक्ष – श्री हृदय शर्मा

आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर (म.प्र.)

प्रधान – श्री प्रकाश चन्द्र सोनी
मन्त्री – श्री अनूप गायकवाड़
कोषाध्यक्ष – श्री वेदामृत गारी

आर्यजन महासम्मेलन में अपनी समाज की बैच लगाकर आएँ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आने वाले सभी आर्यजन भाई-बहन अपनी पहचान के लिए अपनी आर्य समाज का सुन्दर बैच लगाकर आएँ। बैच में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का लोगो, महर्षि दयानन्द का सुन्दर चित्र, अपने आर्य समाज का नाम, अपना नाम व पता अवश्य अंकित करें। इससे आप की पहचान जहाँ आप के आर्य समाज और जनपद के साथ बनी रहेगी वहीं पर आम जनता में भी आर्य समाज और इस महासम्मेलन की चर्चा हो जाएगी। सम्मेलन का लोगो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की वैबसाइट www.aryamahasammelan.org अथवा दिल्ली सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड किया जा सकता है।

प्रथम पृष्ठ का शेष

नेपाल के आर्यों ....

महासम्मेलन के लिए नेपाल के लोगों के मन में अति उत्साह देखने को मिल रहा है। इस अवसर पर सीकर राजस्थान के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी की गरिमामयी उपस्थित रही। स्वामी जी ने कहा कि नेपाल में 2016 के महासम्मेलन के दौरान जो संकल्प लिये गये थे उन्हें पूरा करने का समय आ गया है। जिस तरह भारत से सैकड़ों लोगों ने नेपाल पहुंच कर वैदिक संस्कृति की जड़ों को सींचा था उसी प्रकार नेपाल के आर्यजन भी भारत भूमि पर वैदिक पताका को अवश्य ही फहराएं।

राजधानी काठमांडू के महेश्वरी सदन में आयोजित स्मरण दिवस के अवसर पर श्री सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सीकर (राज) से सांसद स्वामी सुमेधानंद जी के साथ-साथ नेपाल आर्य समाज की ओर से श्री कमलाकांत आत्रेय जी (प्रधान) श्री माधवप्रसाद उपाध्याय जी (मंत्री) एवं श्री तारानाथ जी समेत आर्य महानुभावों ने अपना प्रतिनिधित्व किया व नेपाल के आर्यजनों की भारी संख्या में उपस्थित दर्ज की गई।

शोक समाचार

श्री अनिल महाजन को पत्नीशोक

आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली के सदस्य श्री अनिल महाजन जी की धर्मपत्नी एवं डॉ. महेश विद्यालंकार जी की सलहज श्रीमती विनोद महाजन जी का दिनांक 29 जून 2018 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज कीर्तिनगर में दिनांक 2 जुलाई को सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ आर्य समाज के अन्य अनेक गणमान्य महानुभावों ने पधारकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018

ध्यान देने योग्य बातें

1. महासम्मेलन में स्वयं तो आएं साथ में अपने परिवार व बच्चों को भी साथ लावें।
2. अपनी संस्थाओं के आर्यवीर/ आर्य वीरांगनाओं विद्यार्थियों को परिवार सहित साथ लावें।
3. अपने इष्ट-मित्रों, सम्बन्धियों को महासम्मेलन में आने के लिए प्रेरित करें।
4. ऐसे परिवारों को अवश्य आमंत्रित करें जो पहले कभी आर्य समाजी थे पर किन्हीं कारणों वश अब आर्य समाज से सम्बन्ध नहीं रख पा रहे हों।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्टूबर, 2018

आने वाले महानुभाव अपने आने की व्यक्तिगत सूचना तुरन्त भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली, में भाग लेने वाले महानुभाव के लिए भोजन तथा आवास की व्यवस्था की गई है। अत: अपने आगमन की पूर्व सूचना अग्रिम भेजने की कृपा करें जिससे आपके ठहरने व भोजन की सुन्दर व्यवस्था की जा सके। आप अपना नाम, पता, मोबाईल नं., ईमेल पता निम्न प्रकार के प्रारूप में, **संयोजक, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-110001** के पते पर भेज देवें-

प्रपत्र का प्रारूप

1. नाम : .....पिता का नाम : .....
2. पूरा पता (स्पष्ट अक्षरों में) : .....
   .....
   राज्य ..... पिन कोड : .....
3. मोबाईल नं. : .....
4. ईमेल (यदि हो तो) : .....
5. सम्बन्धित आर्य समाज का नाम : .....
6. आगमन की तिथि : ..... प्रस्थान की तिथि : .....
7. आने का साधन : रेल/बस/निजी वाहन : .....
   (यदि निजी वाहन है तो वाहन का नाम व वाहन सं.):.....
8. आगमन स्टेशन का नाम : .....

दिनांक : ..... हस्ताक्षर
.....

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन: प्रकाशित स्मारिका हेतु निवेदन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका हेतु वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से निवेदन है कि आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेखों को ए-4 साईज के पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर '**स्मारिका सम्पादक**' के नाम '**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018', 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001**' के पते पर या ईमेल aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करने की कृपा करें। -**सम्पादक**

नशा बंदी सम्मेलन सम्पन्न

गत दिनों दिल्ली नशाबंदी समिति के तत्त्वावधान में गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली में नशाबंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नेता मंचों पर तो शराब बंदी पर खूब जोर से बोलते हैं जबकि जमीन पर शराब बन्दी का काम होता दिखाई नहीं देता है। मैं नशाबंदी समिति को आश्वासन देता हूं कि जब कभी भी इस कार्य में मेरे सहयोग की जरूरत होगी मैं सदैव तैयार रहूंगा।

अध्यक्ष श्री मामचंद रिवाड़िया ने समिति के 70 वर्ष का इतिहास बताते हुए कहा कि समिति का निर्माण स्वतंत्रतासेनानी दिल्ली कांग्रेस के अध्यक्ष तथा दिल्ली सरकार के मंत्री डॉ. युधवीर सिंह जी ने किया और डॉ. साहब के बाद श्री चन्द्रमान खंडेलवाल अध्यक्ष बने। इसके बाद समाजवादी एवं जुझारू नेता श्री सावलदास गुप्ता अध्यक्ष बने। इस समय श्री रिवाड़िया जी अध्यक्ष और श्री राकेश कुमार महामंत्री हैं। श्री रिवाड़िया जी ने बताया कि हम स्लम बस्तियों में जाकर नशाबंदी से सम्बन्धित सामग्री बांटते थे, प्रार्थना करते थे कि मद्यपान स्वास्थ्य ओर आत्मा को हानि पहुंचाती है इससे बचना चाहिए।

श्री राकेश कुमार ने कहा कि 'शराब से सबसे ज्यादा हानि गरीब महिलाओं तथा उनके बच्चों को होती हे। बाप शराब पीता है और बच्चे भूखे मरते हैं। आपने कहा कि एक तरफ तो सरकार बापू का नाम लेकर शराब की हानियां बताते हैं दूसरी ओर शराब की दुकानें खोलती है। हम दिल्ली सरकार तथा देश की सरकारों से मांग करते हैं कि शराब की दुकानों को उन क्षेत्रों से दूर रखें जो स्लम बस्तियों, स्कूल, मंदिर, गुरुद्वारे तथा चर्च हों।'

समिति के अध्यक्ष श्री मामचंद रिवाड़िया और महामंत्री श्री राकेश कुमार ने आए हुए अतिथियों एवं आगंतुकों का धन्यवाद किया।

– राकेश कुमार, महामंत्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 जुलाई, 2018 से रविवार 8 जुलाई, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5-6 जुलाई, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 जुलाई, 2018

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2018 दिल्ली में

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में इस बार भी गत सम्मेलन की भांति वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा के लिए नि:शुल्क वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा। जो आर्य महानुभाव इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यसी वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण '**संयोजक, यज्ञ समिति**' के नाम **सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली**-110001 के पते पर भेजें, ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके।

महासम्मेलन आयोजन समिति इस कार्यक्रम को विशेष प्रकार से आयोजित करेगी।

- महासम्मेलन संयोजक

प्रतिष्ठा में,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018

नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

विशेष निवेदन

विश्व की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्र. सभा

ओ३म्
thearyasamaj.org

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

77, 00, 000 + ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

- महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह